ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-5* June-2017
Innovation The Research Concept

'तरूण' काव्य में युग–परिदृश्य

अनिता जैन
कार्यकारी प्राचार्या,
हिन्दी विभाग,
जे.ए.वी.जी. डिग्री कॉलेज,
बड़ौत

सारांश

कविवर डा. रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरूण' ने आज से लगभग आठ दशक पूर्व काव्य के क्षेत्र में पदार्पण किया था। वह युग हिन्दी–कविता के इतिहास में स्वच्छंदतावाद और छायावाद के नाम से जाना जाता है। इसके बाद प्रगतिशील और उसके बाद प्रयोगवादी विचारधारा का उद्‌भव हुआ। 'तरूण' जी ने इन सभी काव्य–प्रवृत्तियों को विकसित होते हुए देखा और इनके प्रवृर्तक कवियों से प्रेरणा प्राप्त कर अपने युगानुरूप परिवर्तित अनुभूतियों को कवि ने अपने काव्य के माध्यम से अत्यन्त भावगर्भित एवं सहज और सफल रूप में अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया। आपकी कविताएं समाज का दर्पण हैं। आपने समसामयिक जीवन से जुड़कर यथार्थ की अत्यन्त सशक्त एवं सफल व्यंजना की है। उनकी रचनाओं मे सामाजिक चेतना का ज्वार है। प्रदूषित वातावरण और असहनीय व्यवस्था के प्रति कवि ने जिस आक्रोश को अभिव्यक्ति दी है, वह कवि की चेतना को सामाजिक–चेतना से जोड़ता है। समाज का एक्सरे से खींचती उनकी कवितायें करूणा, दर्द, व्यंग्य, यातना, शोषण, आशा, निराशा सभी को रेखांकित करती चलती हैं।

मुख्य शब्द : परिवेश, संवेदनशील, नैसर्गिक, प्रतिरूप, विश्रंखलता, उद्‌भूत, भदेस, अनगढ़, निमिष, कटाक्ष, अस्मिता, भयाक्रान्त, संग्राम, मृतप्राय, विद्रूप, तिलांजलि, सम्पृक्त आदि।

प्रस्तावना

मानव सृष्टि का सर्वाधिक बौद्धिक एवं क्रियाशील प्राणी है। अतः वह इस संसार में जो कुछ देखता है, उससे प्रभावित होता है और उसके प्रति अपनी भावनाओं एवं विचारों को अभिव्यक्त करने के लिये उत्कंठित रहता है। मानव की इसी उत्कंठा के परिणाम स्वरूप विविध कलाओं की उत्पत्ति हुई है। इन कलाओं में साहित्य सर्वोत्कृष्ट हैं। साहित्य के अन्तर्गत मानव की हृदयस्थ भावनाओं का संचित कोष सर्वाधिक देखने को मिलता हैं। अपने साहित्य में कभी वह कल्पना लोक में विचरण करता दृष्टिगत होता है तो कभी मानव होने के नाते समाज और समाज में रहने वाले मानव की समस्याओं के चित्रण में निरत। कवि के ऊपर उसकी समकालीन सामाजिक, धार्मिक–अधार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा करता है। यही कारण है कि कविता करते समय समाज–शास्त्री की भांति समाज का क्रमिक अध्ययन न करते हुए भी जो कुछ कहता है, वह समाज की अमूल्य निधि माना जाता है। प्रसिद्ध आलोचक त्रिभुवन सिंह के अनुसार–"साहित्य का भव्य–भवन केवल कल्पना के आधार पर खड़ा नहीं होता। सत्य और कल्पना के संयोग से ही साहित्य का यथार्थ रूप बनता है।"[1]

शोध का उद्देश्य

'तरूण' जी के काव्य में हमे आदि से अन्त तक युगा–नुरूप सम्पृक्त चेतना के दर्शन होते हैं। आपकी कविताओं में आपका युग बोलता प्रतीत होता है। आपकी कविताएं व्यक्तिगत दायरे को लांघकर सार्वजनिक पीड़ा को व्यक्त करती नजर आती हैं। कविता में प्रतिक्षण बदलते परिवेश में अपनी एक तस्वीर आंक देना साधारण बात नहीं। 'तरूण' जी ने इसी असाधारण को साधा है। यही स्पष्ट करना प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य है।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध–पत्र में मननात्मक शोध की निरूपणात्मक, व्याख्यात्मक और मूल्यांकनपरक विधियों को अपनाया गया है। यहाँ प्रमुखतया शोध–परक वस्तुनिष्ठ विधि का प्रयोग किया गया है।

विषय–प्रवेश

कवि प्रारम्भ से ही किसी न किसी रूप में समाज के इसी सत्य को चित्रित करता आया है। आदिकाल में कविवर चन्दवरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' में

अपने नायक के सहारे तत्कालीन समाज का विशाल चित्रप्रस्तुत किया हैं। भक्तिकाल में जायसी की प्रेमधारा में समाज की अभिव्यक्ति अत्यन्त स्पष्ट है।

'मानस' में तत्कालीन लोक संस्कृति का अत्यन्त व्यापक और प्रभावपूर्ण चित्र अंकित किया गया है। इसी प्रकार रीतिकालीन एवं आधुनिक कवियों के काव्य में तत्कालीन समाज एवं संस्कृति की सफल अभिव्यंजना हुई है। समाज की प्रवहमान युग–चेतना की धारा को अभिव्यक्त करने के कारण ही कवि युग–स्त्रष्टा कहलाता है। उसकी महानतम साधना यही है कि वह वर्तमान को अपनी लेखनी से सजीव कर दें।

इस दृष्टि से जब हम कविवर 'तरूण' के साहित्य की समीक्षा करते हैं तो पाते हैं कि एक सच्चे रचनाकार की भांति तरूण जी अपने समय के यथार्थ के प्रति पूर्णतया सजग हैं। आपने अपने चारों ओर के परिवेश को ललक–भरी नजर से निहारा और प्रतिक्षण परिवर्तित होते परिवेश की सुन्दरतम, सजीव झांकिया अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के सम्मुख प्रस्तुत की। जिसका स्पष्टीकरण हम निम्नविवेचन के माध्यम से कर सकते हैं।

'प्रथम किरण' आपकी प्रथम काव्य–रचना है। जिसकी रचनायें सन् 1938 से 1948 तक की कवि–अनुभूतियों से हमारा परिचय कराती हैं। प्रस्तुत रचना में हम कवि का देश की धरती के कण–कण से, प्रकृति से, मनुष्य के दुःख–दर्द से अतीत और वर्तमान के समस्त वैभव से रागात्मक सम्बन्ध जुड़ा हुआ पाते हैं। राजस्थानी ग्रामीण अंचल में जन्में, पले और बढ़े तरूण जी को बाल्यकाल से ही प्रकृति के निकट संपर्क में आने का अवसर प्राप्त हुआ। इसलिये आपकी प्रारम्भिक रचनाओंमें प्रकृति–प्रेम और प्राकृतिक–सौन्दर्य चित्रण ही आपका प्रमुख विषय रहा। कवि ने मन्त्र–मुग्ध होकर इस सृष्टि के सौन्दर्य को निहारा और जीवन तथा प्रकृति का रसपान किया। कवि की 'गंगा–तट का स्वप्न' 'पावस श्री' 'गांव की सांझ' 'प्रकृति की गोद में', 'सावन' आदि अनेक कविताओं में सूक्ष्म प्रकृति चित्रण के दर्शन होते हैं।

कविवर तरूण ने जिस समय अपनी काव्य–रचना प्रारम्भ की, उस समय हमारा देश अंग्रेजों की परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। इसलिये आपकी काव्य–यात्रा देश–प्रेम से प्रारम्भ हुई।

मुक्त–प्रकृति को देखकर कवि को देशवासियों की गुलामी के अवसाद की छाया दुख से घेर लेती है।

"हम बन्दी हैं। नभ में उड़ता बंधहीन महा पक्षी दल।
हम बन्दी हैं। अहा गा रहा सरिताओं का कोमलहिय–तल।
हम बन्दी हैं। अहा लहलहा रहा हरित कोमल तरू पीपल।
हम बन्दी है। अहा, चौकड़ी, भरता बन में चपल मृगी दल।"[2]

और कवि भारत–वासियों की सुप्त–चेतना को जाग्रत करने का आह्वान करता है – 'ओ भारत के वीरों बोलो, कब तक अन्याय सहोगे।'[3]

'मातृभूमि के श्री चरणों पर', और 'रक्षाबन्धन' आदि कविताएं कवि के देश–प्रेम एवं त्याग और बलिदान की भावनाओं से ओत–प्रोत हैं।

कविवर तरूण ने अपनी इन कविताओं में ग्राम्य–जीवन विशेषतया राजस्थानी गांवों में जीवन–यापन करने वाले भोले–भाले ग्रामवासियों के जीवन के सुन्दर चित्र खींचे हैं। कहीं पर चरागाह से गावं की ओर लौटती गायों, झोपड़ी में खेलते बच्चों, पनघट से लौटती ग्राम–वधुओं तथा खेत से हल–बैल लेकर लौटते किसानों के चित्र है4 तो कहीं गांव की सांझ के समय सान्ध्य–शांति का सौम्य–चित्रण। कहीं मानव मन के उल्लास, आशा, आकांक्षा और स्वर्णिम स्वप्नो का चित्रण लिखा है तो कहीं उसके अवसाद और दैन्य का।5 इस प्रकार 'प्रथम किरण' की रचनाओं में युगानुरूप सामाजिक–चेतना की अभिव्यक्ति हुई है।

कवि का दूसरा काव्य संग्रह 'हिमांचला' प्रकाशित हुआ। जिसमें सन् 1949 से 1952 तक की 74 कविताएं संग्रहीत हैं। इस संग्रह की कविताएं 'प्रथम–किरण' की अपेक्षा अधिक मुखर और संवेदनशील है। समय के साथ 'हिमांचला' के अनुभूतिशील कवि का इस दुःखमय जगत से साक्षात्कार हुआ। उन्हें प्रतीत हुआ कि इस संसार में केवल सुन्दरता ही नहीं, विकट–कुरूपता, दुःख–शोक और अभाव भी है। अब तरूण जी ने उन्हें अपनी लेखनी द्वारा संवारने सुधारने का प्रयत्न किया है। इस काव्य संग्रह में कवि ने भावुकता को त्यागकर व्यवहारिक बुद्धि से जीवन और जगत को देखा और समझा है। 'हिमांचला' की भूमिका में स्वयं कवि ने लिखा है दृ "विधाता'' की सृष्टि में जो त्रुटियां हैं, अभाव हैं, उन्हें मैंने 'हिमांचला' में पूरा करने का प्रयास किया है।"6

इसलिये 'हिमांचला' में कवि ने एक ओर जीवन और जगत के प्रेम, सौन्दर्य और उल्लास को अभिव्यक्ति दी है तो दूसरी ओर जीवन के संघर्ष का चित्रण करते हुए कवि ने मनुष्य के निराश और भग्न हृदय में प्राण फूंकने वाला आशा का संदेश भी दिया है। इसमें एक ओर कवि का प्रकृति–प्रेम अत्यन्त विराट फलक पर मुखरित हुआ है तो दूसरी ओर ग्रामीण संस्कृति और कच्ची–मिट्टी के घरों के सौन्दर्य के चित्र खींचे है। एक ओर जहाँ 'निर्जन–तट', 'ग्राम–वधु', 'माटी के घर' परिश्रम करते नर–नारी, आम्र–कुंज, पक्षियों का कलरव आदि ने कवि के मन को आकर्षित किया हैं, वही आगे चलकर उसमें पनपते शोषण की पीड़ा को देखकर कवि की आत्मा चीत्कार कर उठी है–

"युग–युग से शोषित यें गांवों के नारी–नर –
हैं अर्द्धनग्न, चिर मूढ, क्षुधित, ऋण से जर्जर।
ये जीवन के हित केवल ईश्वर पर निर्भर।
नीचे इनके धरती ऊपर सूना अम्बर।
है कितनी करूणा यहाँ और कितनी ममता
क्या इसीलिये हैं यहाँ अविधा, निर्धनता।।[7]

और अन्त में जीवन–संघर्ष से क्लान्त एवं निराश मानव को उसकी शक्ति का आभास कराते हुए उसे आशामय संदेश देते हुए कवि कहता है –

"लौह पुरुष .....है?
नयनों के ये.....क्यों है?
नयनों के यें हीरे–मोती यों मिट्टी में खोता क्यों है?
तेरी ही भौंहों के इंगित –
बिजली बन होते प्रतिबिम्बित,

पर्वत को ठुकराने वाले भार व्यथा का ढ़ोता क्यों है?[8]

अपना टूटा हृदय संभालों
असमय में आंसू मत ढालो
और न ठंडी आह निकालो,
यह रोने का समय नहीं हैं।9

इसी प्रकार हम कह सकते हैं कि 'हिमांचला' की कविताओं में युगानुरूप मधुरता भी है और जीवन एवं भारतीय ग्रामीण–संस्कृति का सौन्दर्य भी। इनमें ग्रामीण–कृषकों की दीन, असहाय और निर्धन अवस्था के चित्र भी हैं और जीवन के लिये उत्साह एवं संघर्षरत रहने की प्रेरणा भी।

हिमांचला के बाद आपके 'आंधी और चांदनी', 'हम शिल्पी संत्रास के', ''खूनी–पुल पर से गुजरते हुए'' पुरूष और 'तरूण काव्य–ग्रंथावली' आदि काव्य–ग्रन्थ प्रकाशित हुए। इन काव्य–ग्रंथों में कवि की अनुभूति व्यापक हो उठी है। उनका सम्बन्ध समाज और संस्कृति से गहराई से जुड़ता गया हैं। युग–जीवन और सामाजिक–परिवेश के प्रति सजग होने से कवि की अनुभूतियां व्यक्ति, समाज और संस्कृति में व्यापक होकर फैल गई है। 'आंधी और चांदनी' संग्रह की 'घोषणा' कविता में कवि स्वयं अपनी काव्य–दृष्टि के परिवर्तन की घोषणा करता हैं–

"अब तो मैं नहीं रहा हूँ प्रकाश का कवि,
और न ही हूँ अंधकार का कवि,
अब तो हूँ मैं वर्षा होते में चमक उठती
सजल चम्पई धूप का कवि।[10]

वास्तव में प्रेम और सौन्दर्य के अमर गायक कविवर तरूण का हृदय वर्तमान की विंसगतियों, विश्रंखलताओं और आर्थिक तथा सामाजिक–असंतुलन से उद्‌भूत पीड़ा, एवं मानव तथा देश की दुर्दशा देखकर वेदना और व्यथा से भर उठा हैं। देश की स्वतन्त्रता के लिये अत्यन्त महंगा मूल्य चुकाना पडा था। उसके बाद जनमानस का उसके प्रति जो मोह भंग हुआ उसका प्रतिबिम्ब कवि की 'नवमानव' कविता में मिलता हैं। 'यह लो मेरे हस्ताक्षर', कविता में कवि स्पष्ट कहता कि अब सरस सौम्य और सुषमावान आदि स्वरूप उसकी आंखें के लिये बड़े कुरूप हो उठे हैं, अब मुझे पुरूष, भदेस और अनगढ़ का रूप यौवन और सौन्दर्य निर्निमेष निहार लेने दो।[11]

इसी प्रकार 'सूरज था कभी', 'मखमली थैला', 'आज मेरी नजर', 'धत्तेरे की', 'लीरिक नहीं एक चीख', 'आदमी का खत', 'एडमिनिस्ट्रेशन', 'धोखा हुआ है', 'सांभर झील', 'लो पकडो लंगोटा', आदि कविताओं में तरूण जी ने अत्यन्त व्यंग्य एवं विद्रोहपूर्ण स्वरों में समकालीन जीवन, समाज, राजनीतिक–विसंगतियों एवं विद्रूपताओं पर कटाक्ष किया है। उसमें कहीं सत्ताधारियों पर व्यंग्य किया है तो कही मनुष्य की अवसरवादिता पर, कहीं कानून पर तो कहीं संस्कृति और मानव मूल्यों पर। वास्तव में समकालीन विंसगतियों का कोना–कोना झांक कर उसका सहज एवं सफल अंकन करने में कवि को अत्यन्त सफलता प्राप्त हुई है।

आज के परिवेश में मानव स्वयं को असहाय, बेबस, दुविधाग्रस्त, एवं द्वन्द्व की स्थिति में अनुभव करता है। किन्तु मानव अपने विनाश एवं द्वन्द्व प्रश्न चिन्ह की स्थिति के लिये स्वयं ही उत्तरदायी हैं –

"अरे हम हैं बन्दी
अपने ही रचे
कोमल और रेशमी नाग–फांस के
आखिर हम आदमी ही तो हैं –
हाड़–मांस के।"[12]

वर्तमान युग की बौद्धिकता एवं यान्त्रिकता ने मानव के अस्तित्व के सामने अनेक प्रस्न चिह्न लगा दिये हैं। वह आज अपनी अस्मिता को पहचानने के लिये व्याकुल हैं। प्रत्येक मानव यह समझता है कि आज के समकालीन परिवेश में उसके रहने या न रहने से संसार में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। आज के यान्त्रिक और भौतिकतावदी युग में मानव मात्र एक यन्त्र बनकर रह गया है। इसलिये मानव के अस्तित्व की तुलना विशाल मशीन के छोटे से पुर्जे से करते हुये 'तरूण' जी कहते हैं –

"एक मशीन के पुर्जे की तरह –
दाये और बांये, आगे और पीछे,
ऊपर और नीचे,
एक बनी बनाई अनी पर हम घूमते रहे।"[13]

देश की आर्थिक स्थिति की लचरता एवं सामान्य जनमानस के शोषण ने भी कवि हृदय को व्यथित किया है। आज देश में अमीर अत्यधिक अमीर और गरीब अत्यधिक गरीब होता जा रहा है। सम्पन्नता और विपन्नता की इस गहरी खाई को कवि ने इस प्रकार स्पष्ट किया है –

"एक ओर ऊंचे भवन, कारें, रोशनियां, डिनर, कैबरे–
जगमग, जगमग, जगमग, ———
दूसरी ओर लाठी, गोली, अश्रू गैंस,
कुत्ते के कान से मुड़े हुए राशन कार्ड,
और थके पग, डगमग, डगमग, डगमग।"[14]

आज समाज मे भ्रष्टाचार का स्वर मुखर है। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार अंधेरे के समान है, जो प्रकाश के अभाव में असमाजिक तत्वों के लिये स्वर्ग के समान होता है। कवि तरूण ने इसी अंधेरे के माध्यम से इस विसंगति की ओर संकेत किया है ———

"अंधकार की पौ बारह हैं, पांचों उंगली अब घी में,
स्वर्ण सुअवसर आया है, करले, जो कुछ भी आवे जी में।
मान गये हाँ मान गये हम, पक्की विजय अंधेरे की।
क्या मुकाबला अंधकार से सूरज का, धततेरे की।"[15]

'राशन कार्ड के साथ वापिस' कविता में कवि ने देश की खाद्य–साम्रगी के नियन्त्रण और वितरण की पोल खोली है तो 'स्वतन्त्रता की रजत–जयन्ती', और 'राज मजदूर' कविताएं देश में व्याप्त महंगाई की समस्याओं की ओर संकेत करती है।

सम्प्रदायवाद और आतंकवाद की समस्या ने मानव–जीवन में भय और संग्राम की वृद्धि की है, जिसके कारण कदम–कदम पर खतरे बढ़ गये हैं। और मनुष्यता का कोई भी मार्ग निरापद नहीं रह गया है 'जड़ दूँ एक मुस्कान' कविता में कवि की इसी सम्प्रदायवाद के प्रति चिन्ता की अभिव्यक्ति हुई हैं –

"पर किधर से जाऊँ?
घर से उतरते ही
जीने में तो है मकड़ी के जालें,
चौराहे पर मन्दिर मस्जिद,
और आगे कैंचीदार हावड़ा के पुल।
किधर से होकर जाऊँ कि
मानव के होठ की खोई मुस्कान लाऊँ।"[16]

समकालीन जीवन के संग्राम, पीड़ा, अत्याचार, भ्रष्टाचार और हिंसा के बीच पलने वाले मानव की स्थिति पर टिप्पणी करते हुए कवि कहता है –

"आंधी में छटपटाते
पीपल के नंगधड़ंग, खुश्क पीले जालीदार पत्ते सा
डोल रहा है रे, अमृत पुत्र आदमी।"[17]

आधुनिक युग की विसंगतियों के परिणामस्वरूप हमारी सभ्यता और संस्कृति भी मृतप्रायः हो गई है। उसका तेजपुंज समाप्त हो गया है "कोकीन का इन्जेक्शन" कविता में कवि ने इसी तथ्य को स्पष्ट किया है, तथापि उन्होंने समाज में व्याप्त इन समस्त विसंगतियों के लिये मानव को उत्तरदायी माना है –

"जिसमें भक्ष्य, अभक्ष्य, धूल, साम्राज्य
सब चुपचाप समा जायें,
और डकार न आये। ऐसा है यह आदमी।"[18]

आज की निरन्तर विकाससमान बौद्धिकता और यान्त्रिकता ने मनुष्य की मनुष्यता एवं संवेदनशीलता पर भारी तुषारापात किया है "क्या सचमुच" कविता में कवि कहते हैं –

"अरे क्या सृष्टि की रचना –
यह आदमी
भव्यतम, सुन्दरतम, विराट,
हो गया है अब निरा,
बर्फ की चट्टान–सा चिकना और सपाट।
इस पर उग नहीं सकेगी अब
संवेदना की कोई भी हरी चिकनी पत्ती, घास।"[19]

"बैंठू में किस मुद्रा में" कविता में कवि समाज की अधोगति से दुखी है। वह समाज की विषम स्थिति, अन्याय, शोषण और अत्याचार से ऊबकर यथार्थ स्थिति का चित्रण निम्न शब्दों में करता हैं –

"न मरू, न जीऊँ, ओठ को सीऊँ?
स्वाद ले लेकर घूंट–घूंट
जीवन का यह काला–काला सा प्रतिपल पीऊँ?
दोनों सिरे पर जलते सरकंडे में बन्दी–
कीट सा मौन मरण सहूँ।"[20]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि 'तरूण जी ने अपने काव्य में समय से सीधा साक्षात्कार किया है। अपने युग की प्रत्येक घटना, हलचल, परिस्थिति और समस्या को आपने कैमरे की भांति अपनी कविताओं में कैच किया है। यह सत्य है कि वर्तमान जीवन में व्याप्त विश्रृंखलता,विद्रूपता, भ्रष्टाचार, अन्याय, आतंकवाद, महंगाई और बौद्धिकता ने मानव, मानव–जीवन समाज, सभ्यता एवं संस्कृति को खोखला बना दिया है लेकिन फिर भी अटूट–आस्था और जिजीविषा के धनी 'तरूण' जी परिस्थितियों से हार मानने के लिये तैयार नहीं हैं, अपितु उनकी आशावादी समूची रचनात्मक ऊर्जा अमानवीयता के विरोध में प्राण फूंक रही हैं। 'जिजीविषा', 'न्यूट्रान बम', 'सत्य–असत्य', 'एक ताजा अभिमन्यु', 'सांभर–झील' आदि कविताएं इस दृष्टि से उल्लेख्य हैं। इस प्रकार 'तरूण' जी इतिहास के रथ के साथ हैं। 'तरूण' जी में आधुनिकता है, सामाजिक प्रतिबद्धता है और उनकी रचनाओं में प्रासंगिकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *श्री त्रिभुवन सिंह, हिन्दी प्रचारक, वर्ष 5 अंक 5–6 पृष्ठ 3*
2. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'तरूण काव्य ग्रंथावली' पृष्ठ 344.*
3. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'तरूण काव्य ग्रंथावली' पृष्ठ 355*
4. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'प्रथम किरण' पृष्ठ 74*
5. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'प्रथम किरण' पृष्ठ 74*
6. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'हिमांचला' की भूमिका (आभास)).*
7. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'हिमांचला' पृष्ठ 45*
8. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'हिमांचला' पृष्ठ 57*
9. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'हिमांचला' पृष्ठ 63–64*
10. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'आंधी और चांदनी' पृष्ठ 01*
11. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'आंधी और चांदनी' पृष्ठ 27*
12. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'हम शिल्पी संत्रास के' पृष्ठ 19*
13. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'आंधी और चांदनी' पृष्ठ 84*
14. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'आंधी और चांदनी' पृष्ठ 76*
15. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'हम शिल्पी संत्रास के' पृष्ठ 56*
16. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'यह लो मेरे हस्ताक्षर' पृष्ठ 14*
17. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'तरूण काव्य ग्रंथावली' पृष्ठ 19*

18. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'आंधी और चांदनी' पृष्ठ 10*
19. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'यह लो मेरे हस्ताक्षर' पृष्ठ 35*
20. *डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरूण, 'आंधी और चांदनी' पृष्ठ 23,*